

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे

॥ त्रयोदशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशक्रघ्ननुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ त्रयोदशः सर्गः ॥

महापाशेर्न सीतां प्रति बलात्कारं कर्तुं रारणस्य प्रोत्साहनं
रारणेन शापवशात् तथाकरणे स्वकीयासमर्थतायाः प्रतिपादनं
निजपराक्रमस्य प्रशंसनं च

रारणं क्रुद्धमाज्जाय महापाशेर्मा महाबलः।
मुहूर्तमनुसङ्गित्य प्राञ्जलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ 6.13.1 ॥

यः खल्वपि वनं प्राप्य मृगर्यालनिषेरितम्।
न पिबेन्मधु सम्प्राप्य स नरो बालिशो भवेत् ॥ 6.13.2 ॥

ईश्वरस्येश्वरः कोहस्ति तव शत्रुनिवर्हण।
रमस्व सह रैदेह्या शत्रूनाक्रम्य मूर्धसु ॥ 6.13.3 ॥

बलात् कुक्कुटवृन्देन प्रवर्तस्व महाबल।
आक्रम्याक्रम्य सीतां रै तां डुङ्ग्वर च रमस्व च ॥ 6.13.4 ॥

लङ्ककामस्य ते पश्चादागमिष्यति किं भयम्।
प्राप्तमप्राप्तकालं वा सर्वं प्रतिरिधास्यसे ॥ 6.13.5 ॥

कुम्भकर्णः सहास्माभिरिन्द्रजिह्व महाबलः।
प्रतिषेधयितुं शक्नोः सरज्जमपि रज्जिणम् ॥ 6.13.6 ॥

उपप्रदानं सान्द्रं वा भेदं वा कुशलैः कृतम्।
समतिक्रम्य दण्डेन सिद्धिमर्थेषु रोचये ॥ 6.13.7 ॥

ইহ প্রাপ্তান্ রযং সর্বাঙ্ঘ্রুংস্তর মহাবল।
রশে শস্ত্রপ্রতাপেন করিষ্যামো ন সংশযঃ ॥ 6.13.8 ॥

এরমুক্তস্তদা রাজা মহাপাশ্চের্ন রারণঃ।
তস্য সম্পূজয়ন্ বাক্যমিদং রচনমব্রবীৎ ॥ 6.13.9 ॥

মহাপাশ্চর্ নিবোধ ংরং রহস্যং কিঞ্চিদাত্মনঃ।
চিরবৃত্তং তদাখ্যাস্যে যদরাপ্তং পুরা মযা ॥ 6.13.10 ॥

পিতামহস্য ভরনং গচ্ছন্তীং পুঞ্জিকস্থলান্।
চঞ্চূর্যমাণামদ্রাক্ষমাকাশেহগ্নিশিখামির ॥ 6.13.11 ॥

সা প্রসহ্য মযা ভুক্তা কৃতা রিরসনা ততঃ।
স্বয়ম্ভূভরনং প্রাপ্তা লোলিতা নলিনী যথা ॥ 6.13.12 ॥

তচ্চ তস্য তথা মন্যে জ্ঞাতমাসীন্মহাত্মনঃ।
অথ সঙ্কুপিতো রেধা মামিদং বাক্যমব্রবীৎ ॥ 6.13.13 ॥

অদ্যপ্রভৃতি যামন্যাং বলান্নারীং গমিষ্যসি।
তদা তে শতধা মূর্ধা ফলিষ্যতি ন সংশযঃ ॥ 6.13.14 ॥

ইত্যহং তস্য শাপস্য ভীতঃ প্রসভমের তাম্।
নারোহষে বলাৎ সীতাং রৈদেহীং শযনে শুভে ॥ 6.13.15 ॥

সাগরস্যের মে রেগো মারুতস্যের মে গতিঃ।
নৈতদ্ দাশরথিরেদ হ্যাসাদযতি তেন মাম্ ॥ 6.13.16 ॥

কো হি সিংহমিরাসীনং সুপ্তং গিরিগুহাশযে।
ক্রুদ্ধং মৃত্যুমিরাসীনং প্রবোধযিতুমিচ্ছতি ॥ 6.13.17 ॥

ন মত্তো নির্গতান্ বাণান্ দ্বিজিহরান্ পন্নগানির।
রামঃ পশ্যতি সঙ্গ্রামে তেন মামভিগচ্ছতি ॥ 6.13.18 ॥

ক্ষিপ্ৰং রজ্জসমৈর্বানৈঃ শতধা কার্মুকচ্যুতৈঃ।
রামমাদীপযিষ্যামি উল্কাভিরির কুঞ্জরম্ ॥ 6.13.19 ॥

তচ্চাস্য বলমাদাস্যে বলেন মহতা বৃতঃ।
উদিতঃ সরিতা কালে নক্ষত্রাণাং প্রভামির ॥ 6.13.20 ॥

ন রাসরেনাপি সহস্রচক্ষুষা
যুধাস্মি শক্যো ররুণেন রা পুনঃ।
মযা ংরিযং বাহুবলেন নির্জিতা
পুরা পুরী রৈশ্ররণেন পালিতা ॥ 6.13.21 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রান্মীকীযে আদিকাৰ্যে যুদ্ধকাণ্ডে ত্রয়োদশঃ সর্গঃ ॥